वर्ण विचार

वर्ण भाषा की प्रारंभिक इकाई है । कोई वर्ण या वर्णसमूह सार्थकता प्राप्त कर शब्द बनते हैं, शब्द विभक्ति से युक्त हो पद बनते हैं और पदों का क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित समूह वाक्य कहलाता है ।

कंठ से लेकर ओठ तक कंठ, कोमल तालु, तालु, मूर्द्धा, दाँत, जीभ, वर्त्स, ओठ आदि के सहारे मनुष्य जितनी मूल ध्वनियाँ निकाल सकता है, उनको व्यवस्थित कर वह अपनी भाषा तैयार करता है ताकि अपने भाव या विचार की अभिव्यक्ति कर सके ।

किन्हीं दो वस्तुओं की टकराहट, घर्षण या वायु प्रकंपन से उत्पन्न नाद को ध्वनि कहा जाता है। कंठ से लेकर ओठों तक विभिन्न स्वरतंत्रियों से उत्पन्न ध्वनियों के लिखित संकेत-चिह्न को वर्ण कहा जाता है ।

वर्ण के पर्याय के रूप में 'अक्षर' कां भी प्रयोग होता रहा है । (वर्ण से अक्षर की भिन्नता के विषय में वैयाकरण एकमत नहीं हैं ।) वर्ण जिस रूप में अंकित होता है उसे लिपि कहा जाता है यानी वर्ण रूप ही लिपि है ।

देवनागरी लिपि में स्वरों का स्वतंत्र प्रयोग भी होता है और व्यंजन के साथ जुड़ने पर मात्रा के रूप में उनके संकेत चिह्न का भी प्रयोग होता है ।

वर्ण के दो भेद किए जाते हैं - स्वर और व्यंजन ।

स्वर उस वर्ण को कहा जाता है जिसका उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण के होता है । जैसे - अ, इ, उ, आ, ओ, ए आदि ।

व्यंजन उस वर्ण को कहा जाता है जिसके उच्चारण के लिए स्वर की सहायता लेनी पड़ती है । जैसे - क, ख, च, प, द, त, न आदि ।

हिंदी वर्णमाला में सारे व्यंजन 'अ' स्वर से युक्त होते हैं । भाषा में प्रयोग की आवश्यकता के अनुसार उनमें अन्य स्वर लगते हैं । स्वरविहीन व्यंजन का उच्चारण संभव नहीं होता । लिखित रूप में स्वरविहीनता (केवल व्यंजन) के सूचक के रूप में वर्ण के नीचे एक चिह्न (्) का प्रयोग होता है जिसे **हल्** कहा जाता है और उससे युक्त वर्ण को **हलंत** कहा जाता है । 'हल्' शब्द का 'ल्' हलंत कहा जाएगा ।

स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ - 11

(इनमें अ, इ, उ, ऋ मूल स्वर हैं)

क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म - 25

य र ल व श ष स ह	–	08
ड़ ढ़	–	02
क्ष त्र ज्ञ	–	03
	कुल =	49
ः (विसर्ग)		
ं (अनुस्वार)		
ँ (चंद्रबिंदु)		
ॅ (अर्द्धचंद्र)	–	04
	कुल =	53

हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसमें अंक निम्नलिखित रूप में लिखे जाते हैं । कुछ अंकों के वैकल्पिक रूप भी हैं । वे साथ ही कोष्ठक में निर्दिष्ट हैं –

0	–	शून्य
१ (१)	–	एक
२	–	दो
३	–	तीन
४	–	चार
५	–	पाँच
६	–	छह
७	–	सात
८ (८)	–	आठ
९ (९)	–	नौ
१०	–	दस

वर्णभेद

उच्चारण की दृष्टि से वर्णभेद – 1. कण्ठ्य 2. तालव्य 3. मूर्द्धन्य 4. दंत्य 5. वत्सर्य 6. ओष्ठ्य 7. दंतोष्ठ्य 8. स्वरयंत्रमुखी

पूरी हिंदी वर्णमाला को दो भागों में बाँटा गया है – (क) स्वर वर्ण और (ख) व्यंजन वर्ण । (संधि में विसर्ग संधि की स्वतंत्र स्थिति है परंतु विसर्ग (:) को हिंदी वैयाकरणों ने व्यंजन के ही अंतर्गत रखा है । विसर्ग अयोगवाह होने के कारण स्वर तथा व्यंजन दोनों से स्वतंत्र हैं । स्वरों में अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व, यों कहें कि मूल स्वर हैं । आ, ई, ऊ, ए, ओ, औ ये दीर्घ स्वर हैं । ये स्वर यौगिक होते हैं। जैसे –

अ + अ = आ	इ + इ = ई	उ + उ = ऊ
अ + इ = ए	अ + ए = ऐ	अ + उ = ओ
अ + ओ = औ		

ॲ - यह अनुनासिक अर्द्धस्वर है ।

पहला उच्चारण स्थान कंठ होता है । उसके बाद तालु (कोमल तालु, कठोर तालु), मूर्द्धा, दंत और ओठ की क्रमिक स्थिति होती है । कंठोष्ठ्य, दंतोष्ठ्य तथा कंठ तालव्य यानी द्विस्थानीय वर्ण भी होते हैं ।

1. कंठ्य - अ, आ, ह और कवर्ग (कंठ से उच्चरित)
2. तालव्य - इ, ई, श और चवर्ग (तालु से)
3. मूर्द्धन्य - ऋ, र, ष और टवर्ग (मूर्द्धा से)
4. दंत्य - ल, स और तवर्ग (दंत यानी दाँत से)
5. ओष्ठ्य - उ, ऊ, पवर्ग (ओठों से)
6. कंठतालव्य - ए, ऐ (कंठ और तालु दोनों के योग से)
7. कंठोष्ठ्य - ओ, औ (कंठ और ओठ के योग से)
8. दंतोष्ठ्य - व (दाँत तथा ओठ के योग से)
9. नासिक्य - ङ, ञ, ण, न, म इनमें स्थान वही होने पर भी उच्चारण में नासिका का सहयोग लग जाता है ।
10. अनुनासिक (◌ँ) चंद्रबिंदु (◌ँ) यह स्वर होता है । संबंधित स्वर या व्यंजन के साथ ही इसका प्रयोग संभव है । इसमें नासिका विवर का विशेष प्रयोग होता है ।
11. अर्द्धचंद्र - यह भी ओष्ठ्य वर्ण है ।

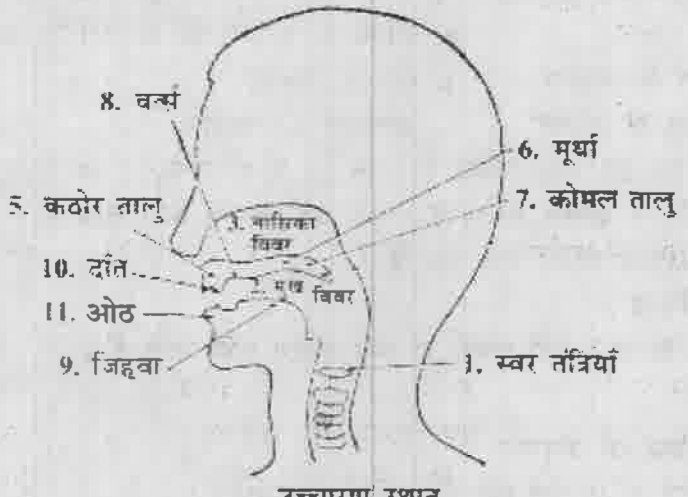

उच्चारण स्थान

उच्चारण समय के अनुसार वर्णभेद

(क) ह्रस्व - जिसके उच्चारण में न्यूनतम समय लगे । जैसे - अ, इ, क, ह आदि ।